(IJDSSH) 2018, Vol. No. 5, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

भूमंडलीकरण और समकालीन कविता का संघर्ष

डा. मनिन्द्र जीत कौर

व्याख्याता हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, सूरतगढ़

THE STRUGGLE BETWEEN GLOBALIZATION AND CONTEMPORARY POETRY

Dr Maninder Jeet Kaur

Lecturer, Dept of Hindi, Government College, Suratgarh, Shriganganagar

ABSTRACT

Globalization has become a "big idea." It permeates every debate in the world. Knowingly or unknowingly, it remains present in all literary, English, political, and economic debates in Hindi. Globalization has transformed the entire world into a market, leading to a radical change in our political, economic, social, and cultural structures. This new capitalism is leading to a market-driven mindset, and everyone aspires to occupy this market.

Keywords: social distortions; multinational; globalization; internet

सारांष

भूमंडलीकरण/वैश्वीकरण/ग्लोबलाइजेशन एक 'वृहद विचार' बन चुका है। विश्व की प्रत्येक बहस में यह व्याप्त रहता है। हिन्दी में चलने वाली तमाम साहित्यिक, राजनीतिक और आर्थिक बहसों में यह जाने–अनजाने बना ही रहता है। भूमंडलीकरण ने पूरे विश्व को एक बाजार बना दिया है. जिससे हमारे राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ढांचे में आमूल–चूल परिवर्तन हुआ है। इस नए पूँजीवाद से बाजारवाद हावी हो रहा है और हर व्यक्ति इस बाजार में बैठने की इच्छा रखता है। कबीर ने शायद उसी बाजार रूपी माया के बारे में कहा था–

माया महा ठगिनी हम जानी,

(IJDSSH) 2018, Vol. No. 5, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

तिरगुन फांस लिए कर डोलै बोले मधुरी बानी।

शब्द : सामाजिक विकृतियां, बहुराश्ट्रीय, भूमंडलीकरण, इंटरनेट।

प्रस्तावना

भूमंडलीकरण को लेकर पक्ष और विपक्ष में अपने–अपने मत–मतांतर हैं। भूमंडलीकरण के पक्ष में विचार रखने वालों का मानना है कि, ''आज के समय की सबसे बड़ी चालक शक्ति भूमंडलीकरण है। यही तमाम आधुनिक समाजों को गति देता है और नई विश्व–व्यवस्था को बनाता है। राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्र बढ़ रहा है। ये नए सीमांत हैं, जिनसे समाजों का भाग्य तय होता है।''[1] भूमंडलीकरण का विरोध करने वाले तर्क देते हैं, ''तीसरी दुनिया के देशों का हाशियाकरण बढ़ रहा है। जो भी व्यापार बढ़ रहा है उसका बहुत बड़ा हिस्सा उत्तरी समूह में आपस में ही होता है, दक्षिणी समूह को अधिक नहीं मिलता। ज्यादातर विदेशी निवेशों के केंद्र पश्चिमी देश हैं। इससे दुनिया में गरीबी और अमीरी का नया विभाजन पैदा हो रहा है।''[2] इनका मानना है कि इससे कुछ भी नहीं बदलेगा।

सार रूप में अगर कहा जाए तो भूमंडलीकरण से विश्व बाजार बना, तकनीकी आदान–प्रदान बढ़ा, विदेश जाना–आना सरल हुआ, बहुराष्ट्रीय निगमों का जोर बढ़ा, मीडिया और पश्चिमी पापुलर कल्चर का विस्तार हुआ, आवागमन और संचार के साधन बढ़े। टेलीफोन, कंप्यूटर, इंटरनेट का युग आया और यह परिवर्तन जीवन के हर क्षेत्र में आया। जहाँ एक तरफ राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक ढांचे को प्रभावित किया है, वहीं हमारी संस्कृति भी प्रभावित हुए बिना नहीं रही है। इस दौर में संस्कृति एक उद्योग, एक उत्पाद, एक ब्रांड बन गई। संस्कृति खरीदे जाने योग्य, बेचे जाने योग्य सर्वसुलभ चीज बन रही है। ऐसे में समकालीन कविता अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला कर रही है। हमारे इस संकट और दुःख का कारण बाहरी न होकर भीतरी है, ''अपने समाज की संरचना वैषम्यमूलक, मुद्रापरक, संग्रहशील, उच्चवगोन्मुख और अलगाव की प्रोत्साहक है। यह सामाजिक, राजनीतिक 'जनतंत्र' बड़े लोगों के लिए एक संस्था है। व्यवहार में जनतंत्र का अर्थ है– 'अल्पतंत्र'। इस संरचना

(IJDSSH) 2018, Vol. No. 5, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

तथा ढांचे को तोड़ने वाला साहित्य ही समकालीन साहित्य है।'[3] हमारे देश की बदलती इन हवाओं, इन स्थितियों में, हमारी चेतना में बसा स्वभाव और परम्परित संगीतात्मक परितृप्ति, भावों की निष्पत्ति, इन सबसे हम चाह कर भी अलग नहीं हो सकते, क्योंकि इनकी जड़ें कहीं गहरे धरातल पर जाकर खड़ी हैं। आज का जीवन स्थिति का नहीं, गति का जीवन हो गया है। व्यक्ति इसके वेग की लपेट में आ चुका है। जीवन का उद्योगीकरण होने से सामाजिक मूल्यों का विकेंद्रीकरण और वैयक्तिक मूल्यों का केंद्रीकरण हो गया है। सर्वत्र आपाधापी व्याप्त है। मानव–अस्तित्व गौण एवं निरीह बन गया है। परिवेश ने बाह्य जीवन को ही नहीं अपितु सोच, व्यवहार एवं मूल्यों में परिवर्तन कर दिए हैं।

अतः आज की कविता, जिसे समकालीन कविता का नाम दिया गया है, वह अपने समय के साथ सीधी और उग्र मुलाकात करती है और इसमें 'जो हो रहा है' का सीधा वर्णन मिलता है। काल की दृष्टि से हर काल का सृजक अपने पिछले चले आ रहे युगों के सृजक से आधुनिक होता है। आधुनिकता कोई अवधारणा मात्र नहीं है बल्कि उसे तो सामाजिक जीवन के यथार्थ और अनुभवों के विविध आयामों से जुड़ना होता है। यह अंतर्विरोधों की कविता है, जिसमें कल्पना के स्थान पर यथार्थ चिंतन को प्राथमिकता दी गई है। यही कारण है कि इस लेखन का मूल स्वर 'व्यवस्था–विरोध' का स्वर है। समकालीन कविता में प्रतिबद्धता, आक्रोश, आम आदमी, ध्वंस, वाम संस्कृति, विद्रोह, गुरिल्ला चेतना आदि शब्दों का प्रयोग बढ़ा है और ये शब्द कवि के विचारों और सामाजिक दर्शन की तरफ संकेत करते हैं। समकालीन कविता के प्रमुख हस्ताक्षरों में मुक्तिबोध, धूमिल, लीलाधर जगूड़ी, सौमित्र मोहन, रघुवीर सहाय, कुमार विकल, बलदेव वंशी आदि हैं। कवि धूमिल ने प्रत्येक समस्या को सहज रूप से ग्रहण करके उसकी तह तक पहुंचने का प्रयास किया है। उन्होंने बात अपनी समस्या से शुरू की है किंतु उसे विस्तृत फलक प्रदान करते हुए राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने का प्रयास किया है–

''वक्त बहुत कम है/इसलिए कविता पर बहस शुरू/करो और शहर को अपनी ओर झुका लो/क्योंकि असली अपराधी का/नाम लेने के लिए/कविता, सिर्फ उतनी

(IJDSSH) 2018, Vol. No. 5, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

ही देर तक सुरक्षित है/जितनी देर, कीमा होने से पहले/कसाई के ठीहे और तनी हुई गडांस के बीच बोटी सुरक्षित है।''[4]

कविता जहाँ एक तरफ वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य और अव्यवस्था को बेपर्दा करती है तो दूसरी तरफ सामाजिक विकृतियाँ, दमघोंटू संदर्भों एवं जीवन की विडम्बनाओं को भी उजागर करती है। 'बलदेव खटीक' कविता में पुलिस की अमानवीयता का यथार्थ चित्रण करते हुए लीलाधर जगूड़ी लिखते हैं–

एक मार खाया हुआ आदमी चिंचियाता है/मेरा बटुआ छिन गया/उसमें मेरी लड़की का फोटो भी था/वे उससे बलात्कार करेंगे/वे उसे मार डालेंगे... उस मटीले कागज पर मेरा दर्द–दर्ज करो/अपने होठों पर मुर्दा दिन को जिंदा करते हुए/दीवान कहता है–/किस कलम से करूं?/चाँदी की कलम से करूँ ?/सोने की कलम से करूँ ?/कि लकड़ी की कलम से करूँ?[5]

पीड़ा आज इस बात की है कि ऐसे समय में संघर्षरत रहने के बजाय व्यक्ति समझौतावादी प्रवृत्ति अपनाना ही श्रेयस्कर समझता है। जन समुदाय में व्यवस्था का हिस्सा बनने की होड़ है, उसका प्रतिरोध करने की नहीं–

''चारों ओर जो शोर है/इसका जो भी मतलब हो/ इस व्यवस्था में/हर आदमी कहीं न कहीं चोर है।''[6]

यंत्रीकरण की प्रक्रिया ने मनुष्य की सोच को परिवर्तित कर दिया है। मनुष्य की निरंतर विकास प्रक्रिया में आज जो स्थितियाँ हैं वो मानवीय दृष्टि से बंजर कही जा सकती हैं। जिस पर न फसल और न कविता पैदा हो सकती है–

''समय की सपाट धरती पर/न फसल उग सकती है न कविता/उस पर केवल मशीनें दौड़ सकती हैं हर क्षण, हर मोड़ पर एक ही आवाज उगलती हुई/एक ही धूल और एक ही धुआं फेंकती हुई।[7]

समकालीन जीवन में व्याप्त बाहरी तत्त्वों की आक्रामकता और मानव विरोधी व्यवहार के विरुद्ध कविता का कार्य हो गया है कि वह मानव के अस्तित्व को बचाने

(IJDSSH) 2018, Vol. No. 5, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

का प्रयास करे और सचेत करे कि उसे किस प्रकार इस शोषण और हिंसा की पेचीदगियों से जूझना है। धूमिल के अनुसार–

''कविता मारती नहीं/जान बचाने की कोशिश में पहल करती है।[8]

पूँजीवादी व्यवस्था और बाजार ने व्यवस्था में एक होड़ मचा दी है और जहाँ मूल्यों का स्थान उपयोगिता ने ले लिया है। सबसे बड़ी समस्या है पाखंड की. जिसे 'स्टेटस' नाम दे दिया है. कवि की चिढ़ इस पाखंड को लेकर है। बड़ा आदमी पाखंड करे तो लगता है ये उसकी जरूरत है पर साधारण आदमी भी जब बात–बात में सीधा व्यवहार नहीं करता तो क्रोध उत्पन्न होता है। जन साधारण के ढोंग का बेबाक वर्णन इस कविता में मिलता है–

''लोग या तो कृपा करते हैं या खुशामद करते हैं/ लोग या तो ईर्ष्या करते हैं या चुगली खाते हैं/न कोई तारीफ करता है न कोई बुराई करता है/न कोई हँसता है न कोई रोता है/न कोई प्यार करता है न कोई नफरत/लोग या तो दया करते हैं या घमंड/दुनिया एक फंफुदियाई–सी चीज हो गई है।''[9]

राजनीतिक सत्ता शक्ति के तौर–तरीके और व्यवहार, मनुष्य की स्वायत्तता एवं कला–कविता के विरुद्ध है। मनुष्य की सोच, मानवीयता पर हर तरफ से क्रूर एवं सर्वपक्षीय हमले हो रहे हैं और इसमें सबसे अधिक सहयोग प्रौद्योगिकी का रहा है, जिसके जाल में उलझकर व्यक्ति सत्य और असत्य में भेद करना भूलता जा रहा है। कवि उस वस्तुस्थिति को पैनी दृष्टि से परखने के लिए कहता है–

''देखता हूँ चीजों की सक्रिय सत्ताओं और संयोजन गुण को/कैसे नजर अंदाज कर सकते हो/आखिर कब तक/छिपाए रख सकते हो/अपनी काईयाँ हरकतें और खूनी हाथ।''[10]

मनोरंजन, ज्ञान एवं रुचि के साधनों को वीडियो, दूरदर्शन और इंटरनेट आदि के विकास ने किस तरह बदला है, यह किसी से छिपा हुआ तथ्य नहीं है। भूमंडलीकरण का प्रभाव संचार के माध्यम से जहाँ व्यक्ति की अस्मिता को समाप्त कर रहा है, वहीं

(IJDSSH) 2018, Vol. No. 5, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

उसने मर्यादा, सामाजिक मूल्यों को सिरे से नकार दिया है। कविता उस अस्मिता को बचाने का प्रयास कर रही है–

''वह बच्चा/ जो पालने में मुस्करा रहा है आजकल इसकी हँसी/लोहे के सांचो में चल रही होगी/वह बच्चा/जो माँ के गर्भ में/गुलाब–सा खिल रहा है पंखुडी पंखुड़ी/कल बम विस्फोटों में उड़ रहा होगा चिंदी चिंदी/अभी फिलहाल इतना करो/यदि बच्चे को बचा नहीं सकते कल को तो उसे इन खबरों से बचाओ।''[11]

निष्कर्षतः वर्तमान के निराशावादी सिद्धांत, स्थितियाँ हमें क्षणिक प्रभाव में लपेट सकती है, किंतु हमारी जड़ों को नहीं हिला सकतीं। वही रचना शाश्वत और चिरंतन होती है, जिसमें समकालीन जीवन का सत्य, व्यथा और मूल्यों की अभिव्यक्ति होती है। समकालीनता, एक काल में साथ–साथ जीने का नाममात्र नहीं है बल्कि उस काल की चुनौतियों एवं समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अगर समकालीन रचना–व्यवस्था पर प्रहार नहीं करती तो वह अप्रासंगिक है। समकालीन कवि ने सदैव ही जनपक्षीय विचारों को अपनी रचनाओं में उकेरा है और सत्ता की खामियों को आवरणविहीन कर जनता को एकत्र एवं संगठित करने का प्रयास किया है और निरंतर जड़त्व के स्थान पर सक्रियता का परिचय देता आया है। अपने संघर्षपूर्ण विचारों एवं परिवर्तन की आकांक्षाओं को लेकर चलने के कारण यह समकालीन कविता साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

संदर्भ

1. सुधीश पचौरी : 'भूमंडलीकरण और उत्तर सांस्कृतिक विमर्श', भूमिका

2. वही।

3. डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय 'समकालीन सिद्धांत और साहित्य', पृष्ठ 16–17

4. हुकुमचंद राजपाल : 'आधुनिक हिन्दी काव्य' (संग्रह) पृष्ठ 128

5. डॉ. बीना शर्मा 'आधुनिक काव्य संग्रह', पृष्ठ 130

6. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी 'कविता यात्रा रत्नाकर से रघुवीर सहाय', पृष्ठ 106

7. रामदरश मिश्र, 'कंधे पर सूरज', पृष्ठ 19

(IJDSSH) 2018, Vol. No. 5, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5142; p-ISSN: 2455-7730**

8. धूमिल : 'कल सुनना मुझे', पृष्ठ 61

9. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी 'कविता यात्राः रत्नाकर से रघुवीर सहाय', पृष्ठ 81

10. नरेन्द्र मोहन 'सामना होने पर', पृष्ठ 62

11. बलदेव वंशी 'बच्चे की दुनिया', पृष्ठ 18